रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –38 ● अंक –13 ● कानपुर 1 से 15 जुलाई 2016 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹100

पद्धति को बचाना है तो कड़े निर्णय लेने होंगे

संघर्षक्षमता में आयी कमी अकेले ही चलना पड़ेगा
राज्य सरकारों का किया जायेगा ध्यानाकर्षण
कुछ इलेक्ट्रो होम्योपैथों की बदल गयी सोच
आयुष के नाम पर चला रहे हैं दुकानें

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में रोज़ नये–नये परिवर्तन होते रहते हैं यह परिवर्तन अगर सकारात्मक हों तो पद्धति के विकास में सहायक होते हैं और जब यह परिवर्तन नकारात्मकता का स्वरूप ले लेते हैं तो पद्धति के विकास को अवरूद्ध करने लगते हैं गत दो वर्षों में मूल भूत परिवर्तन हुआ है इलेक्ट्रो होम्योपैथी की संस्था संचालन करने वाले लोगों की मानसिकता में मूलभूत परिवर्तन आया है और तो और इसका परिणाम यह हो गया है जो वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में लगे थे वह आज नाम बदल कर सामने आ रहे हैं।

बहुत सारे ऐसे लोग हैं जिनमें निराशा इस कदर घर कर गयी है कि काम तो करना चाहते हैं लेकिन दिशा सही नहीं पकड़ रहे हैं एक दूसरे के अधिकारों पर अतिक्रमण तक सीमित रहें तो ठीक है अब तो लोग बलात अतिक्रमण करने लगे हैं, जीवन पर्यन्त इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ाव रखने के कारण न तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी को छोड़ रहे हैं और न ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी से मोह भंग हो पा रहा है।

जब हम इस विषय पर विचार करते हैं कि जब इन्हें इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य नहीं करना है तो फिर इस पद्धति को अपने असफल प्रयासों से दूषित क्यों कर रहे हैं ?सोचने के बाद मन में यही उत्तर आता है कि शायद जो साख उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कमायी है उसको छोड़ना भी नहीं चाहते और भुना तो पा ही नही रहे हैं, इन्हीं सम विषम परिस्थितियों के कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथी उस स्थान को नहीं प्राप्त कर पा रही है जो उसे प्राप्त कर लेना चाहिये, जब हम सब इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय अधिकार दिलाने के लिए सरकार से लड़ते थे तब इलेक्ट्रो होम्योपैथी चरम पर थी।

आज जब केन्द्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन के लिए सारे अधिकार दे दिये गये हैं तब भी हम विकास की राह पर बढ़ नहीं पा रहे हैं यह एक ऐसा यक्ष प्रश्न है जिस पर यदि शीघ्र उत्तर नहीं पाया गया तो शायद इलेक्ट्रो होम्योपैथी के उस विकास का सपना जो हम सब लोगों ने देख रखा है शायद आसानी से सम्भव न हो सके इन्हीं सब विषयों पर गम्भीरता से चिन्तन के लिए व भविष्य की ठोस रणनीति तैयार करने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा 21 जून, 2016 को कानपुर में विकासोन्मुखी चिन्तन शिविर का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम की अध्यक्षता एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 मो0 हाशिम इदरीसी ने की।

हर चिन्तक ने अपने–अपने विचार रखे इस बैठक का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह रहा कि हर विचार सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए ही थे छिद्रान्वेषण के लिए कोई भी स्थान नहीं था विभिन्न पहलू पर चर्चा होने के बाद सामूहिक रूप से जो निचोड़ आया उस पर निर्णय लेते हुए माननीय अध्यक्ष जी ने तय किया कि यदि वास्तव में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति को विकास के रास्ते पर ले चलना है तो हमें कुछ कड़े निर्णय लेने पड़ेंगे यह निर्णय किसी व्यक्ति विशेष या संस्था के लिए न होकर सामूहिक हैं क्योंकि अब समय आ गया है कि निजी हितों से ऊपर उठकर सिर्फ चिकित्सा पद्धति के लिए कार्य किया जाये इसके मूल में यह है कि जब कोई चिकित्सा पद्धति पुष्पित पल्लवित होती है तो उससे जुड़ा हर व्यक्ति स्वतः समृद्धिशाली हो जाता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी का क्षेत्र बहुत विस्तृत है और सम्भावनायें भी असीम हैं इन सम्भावनाओं से परिणाम निकालना हमारा अपना कार्य है ऐसे व्यक्ति जो स्वार्थ से लिप्त होकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अन्य पद्धतियों के साथ जोड़कर विकास यात्रा में शामिल होना चाहते हैं उनके स्वप्न कभी पूरे होते नहीं दिखते क्योंकि हर चिकित्सा पद्धति को अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी पड़ती है।

गत दो वर्षों से योग और नेचुरोपैथी की चकाचौंध से हमारे कुछ साथी इस कदर प्रभावित हैं कि वे इलेक्ट्रो होम्योपैथी को इसके साथ घालमेल करके इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आवरण पहने रहना चाहते हैं यह कितना तर्क संगत है ?यह तो वही जान सकते हैं जो इस तरह की धारणा के पोषक हैं।

ऐसी धारणायें हो सकता है कुछ समय तक उन्हें यश और धन प्रदान कर दें लेकिन जब स्वंय उनका अन्तर्मन इस विषय पर चिन्तन करने के लिए विवश करेगा तो शायद वह खुद को क्षमा नहीं कर पायेंगे। आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी से काम करने की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है कहीं पर कोई रूकावट या असहजता जैसी बात नहीं है फिर भी तालमेल की जगह घालमेल का काम जारी है सबसे संकट पैदा करने वाली बात औषधि निर्माण के क्षेत्र से आने वाली है आज पूरे भारत में सैकड़ों की संख्या में इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधि निर्माणशालायें जन्म ले चुकी हैं और हर औषधि निर्माता गुणवत्ता युक्त औषधि निर्माण का दावा कर रहा है, हम उनके दावे को खारिज नहीं करते लेकिन यदि कभी कोई परीक्षण हो जाये तो वह परीक्षण की हर कसौटी पर खरा उतरे, पहले कागजी सत्यापन होते थे अब भौतिक सत्यापन का समय है इसलिए अगर किसी निर्माणशाला का भौतिक सत्यापन किसी सक्षम अधिकारी द्वारा किया जाये तो निर्माण शाला संचालक अपनी निर्माण प्रक्रिया और अधिकारों के बारे में अधिकारी को बता कर संतुष्ट कर दे थोड़ी बहुत कमी है तो उसके लिए समय मिल सकता है लेकिन जहां कुछ भी नहीं है और उस विषय पर गलत प्रचार किया जाये तो यह विषय कभी भी उचित नहीं ठहराया जायेगा।

आजकल कुछ कम्पनियां लाइसेंस शुदा दवा बना रही हैं अब आप इन दवा निर्माताओं से पूछिये कि आप को किस इकाई ने निर्माण का लाइसेंस प्रदान कर रखा है ?क्योंकि जिस संगठन को भारत सरकार ने अधिकृत कर रखा है उस संगठन द्वारा अभी तक किसी भी औषधि निर्माता को औषधि निर्माण का प्रमाण पत्र नहीं दिया गया है जिन लोगों के पास किसी तरह का लाइसेंस है वह लाइसेंस खाद्य एवं औषधि प्रशासन प्राधिकरण द्वारा प्राप्त किये गये हैं इस तरह के प्राप्त लाइसेंसो से इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियों का निर्माण कैसे सम्भव है ?इसका उत्तर वही निर्माता दे सकते हैं जो इस तरह के शब्दों का प्रयोग करते हैं। हँसी तो तब आती है जब एक ऐसे बुजुर्ग व्यक्ति द्वारा जिसने जीवन के लगभग 6 दशक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सेवा में गुज़ारे पता नहीं ! किस भ्रम जाल में फंसे हैं !! कि वह यूनानी व आयुर्वेदिक के नाम पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधि का निर्माण कर रहे हैं और ऐसी औषधियों की गुणवत्ता के बड़े–बड़े दावे कर रहे हैं। अब ऐसी बातें इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में कभी सहायक होंगी या ये प्रश्न ही बने रहेंगे ?हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि ज्यों–ज्यों विकास होता है त्यों–त्यों उसे कसौटी पर कसा जाता है आज की सरकार स्वास्थ्य के प्रति ज़्यादा सजग है और औषधि के क्षेत्र में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाये हुए है। योगा का पूरे विश्व में प्रचार प्रसार हो रहा है बड़े बड़े दावे भी होते हैं कि गम्भीर से गम्भीर रोगों से मुक्ति योग द्वारा सम्भव है इस पर तरह तरह की टिप्पणियां भी आ रही हैं भारत सरकार ने आरोपों से बचने के लिए एक विशेषज्ञ समिति गठित की है जो योग के लाभ और हानि का वैज्ञानिक परीक्षण करेगी, इसी तरह अभी तक आयुर्वेदिक और यूनानी औषधियों का निर्माण इस आधार पर हो जाता था कि इस औषधि निर्माण के लिए शास्त्रों में यह विधि वर्णित है। पर अब सरकार ने एक वैज्ञानिक कमेटी का गठन किया है जो यह निर्णय लेगी कि जिन–जिन घटकों का प्रयोग इन औषधि निर्माण में किया गया है उसका क्या वैज्ञानिक आधार है ?आज इस कसौटी पर आयुर्वेद और यूनानी हैं तो कल यह शिकंजा इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर भी कसा जा सकता है और उस वक्त यदि हमारी औषधियां वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरी नहीं उतरीं तो क्या होगा ?

इन सारी गम्भीर विषयों पर चिन्तन के बाद अध्यक्ष द्वारा यह निर्णय लिया गया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए भारत सरकार स्वास्थ्य मन्त्रालय का 21 जून 2011 का आदेश काफी है यह आदेश स्पष्ट एवं अधिकार प्रदान करता है और इस आदेश से यह भी स्पष्ट है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जो भी कार्य होंगे वे 25 नवम्बर 2003 में वर्णित निर्देशों के अनुसार ही किये जायेंगे और सभी राज्य सरकारों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को यह स्पष्ट आदेश भी है कि इस आदेश को हर राज्य अपने यहां लागू करे इस तरह से पूरे देश में 21 जून 2011 के अनुसार कार्य किया जा सकता जो लोग इसके विरूद्ध कार्य करते है वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कभी भी सहायक नहीं सिद्ध हो सकते इसलिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन आफ इण्डिया ने यह निर्णय लिया है कि सभी राज्य सरकारों को 21 जून 2011 की प्रति प्रेषित कर उनसे निवेदन किया जायेगा कि हर राज्य सरकारें अपने राज्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में कार्य कर रही संस्थाओ के कार्यों की समीक्षा करें और जो संस्था 21 जून,2011 के अनुरूप कार्य कर रही हो सरकार उन्हें अपना सहयोग व समर्थन प्रदान करे। कारण यदि एक संस्था विधि सम्मत ढंग से और निर्देशों का पालन करते हुए कार्य कर रही है वहीं अन्य संस्थायें मन माने ढंग से कार्य कर रही हो ऐसी स्थिति में कार्यों का सही मूल्यांकन नही हो पाता है ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि जों संस्थायें वास्तविक कार्य कर रही हो वह बिना किसी गठजोड़ के अकेले ही कार्य करें क्योंकि सफलता पाने के लिए दो चार लोगो की राय की आवश्यकता नहीं होती व्यक्ति अकेले ही कार्य करते हुए परिणामों को प्राप्त कर

शेष पेज 3 पर

चिन्ता नहीं चिन्तन हो

मनुष्य के जीवन में चिन्तायें आती और जाती रहती हैं या दूसरे शब्दों में कहा जाये कि जीवन के महत्वपूर्ण घटनाओं में चिन्तित होना भी एक घटना है, चूंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ा हुआ हर व्यक्ति भी मानव की श्रेणी में आता है इसलिए उनका चिन्तित होना स्वाभाविक ही है, लेकिन यह कटु सत्य भी है कि चिन्ता से किसी समस्या का समाधान नहीं होता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिन्ताओं के विविध स्वरूप हैं, चिकित्सक चिन्तित है कि मुख्य चिकित्सा अधिकारी उसका रजिस्ट्रेशन नहीं कर रहा है, पंजीयन की प्रेरणा देने वाले इसलिए चिन्तित हैं कि चिकित्सक पंजीयन का आवेदन नहीं कर रहा है, कालेज चलाने वाले चिन्तित हैं कि उनके यहाँ प्रवेश नहीं हो रहे हैं, शीर्ष संस्थायें अपने अस्तित्व के लिए चिन्तित हैं, शीर्ष संस्थाओं से जुड़े कर्मचारी अपने भविष्य को लेकर चिन्तित हैं, कार्यालय के कार्यकर्ता अपनी टेबल को लेकर चिन्तित हैं, इस तरह देखा जाये तो हर व्यक्ति चिन्ता ग्रस्त ही दिखता है। मगर मूल प्रश्न यह है कि क्या इन चिन्ताओं से कुछ हासिल होना है ?जब चिन्ताओं से कुछ मिलना नहीं तो चिन्ता क्यों करें ! सफलता पाने के लिए चिन्ता का स्थान चिन्तन को मिलना चाहिये, चिन्तित व्यक्ति कभी भी सकारात्मक सोच के साथ कार्य कर ही नहीं सकता और जहाँ नकारात्मकता पहले ही प्रभावी है वहां से किसी भी अच्छे परिणाम की आशा करना व्यर्थ है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी आज जिस स्थिति में है वह एक स्पष्ट चिन्तन की आवश्यकता महसूस करती है क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भविष्य आज भी स्पष्ट है, बस ज़रूरत है तो एक ऐसी नीति निर्धारण करने की जिसपर चलकर भविष्य की रूपरेखा तय की जा सके, यदि हम आज की स्थिति पर दृष्टिपात करते हैं तो और खोया पाया के दृष्टिकोण से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का मूल्यांकन करते हैं तो पाने का पलड़ा ज़्यादा भारी है, हम लगातार पा ही तो रहे हैं। पाने का सिलसिला 5–5–2010 से जो शुरू हुआ था वह आज भी यथावत है, 5–5–2010, 21 जून, 2011, 4 जनवरी, 2012, 2 सितम्बर, 2013 व 14 मार्च, 2016 यह सारी तिथियां हमें कुछ न कुछ दे ही रही हैं और इतना दे रही हैं कि जिनका की हम उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, सबकुछ पा कर कुछ भी न पाने जैसा प्रदर्शन करना इस बात को स्पष्ट करता है कि हमारे आत्मबल में इतनी कमी आ गयी है कि सामने रखे गेंद को भी पत्थर समझ कर बच कर निकलने का प्रयास करते हैं और फिर शुरू होता है चिन्तित होने का अन्तहीन सिलसिला और यदि यह सिलसिला ऐसे ही चलता रहा तो जो कुछ पाया है या तो काल के गाल में समा जायेगा या फिर इसका लाभ वही उठा पायेंगे जिनकी दृष्टि दूरदर्शी होगी, इसलिए चिन्ताओं के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कोई स्थान नहीं होना चाहिये और जो चिन्तित व्यक्ति हैं उन्हें चिन्तन शिविर में जाकर आत्म चिन्तन करना चाहिये कि भविष्य का निर्धारण उन्हें कैसे करना है ! उदर पोषण की भावना से ऊपर उठकर एक वैभवशाली जीवन की कल्पना करते हुए कार्य करें क्योंकि जीवन में कुछ भी नामुमकिन नहीं होता, किसी कवि ने ठीक ही कहा है आदमी सोच तो ले उसका इरादा क्या है ! जब इरादा पक्का होता है तो चिन्तायें उनकी राह में रोड़ा नहीं अटकाती हैं। इस बात में कोई दोराय नही है कि आज की बाज़ारवादी संस्कृति ने परिभाषायें व मूल्य बदल कर रख दिये हैं मंज़िल के स्थान पर बाज़ार नज़र आते हैं लेकिन ऐसे व्यक्ति चिन्ताओं से परे होते हैं इसलिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हर व्यक्ति का यह दृष्टिकोण होना चाहिये कि जीवन के पथ पर चिन्तित रहते हुए प्रगति नहीं पायी जा सकती है जो व्यक्ति चिन्तित हैं या तो उनकी चिन्ता दूर करने का प्रयास करना चाहिये या फिर उनसे किनारा कर लेना चाहिये चूंकि हमें अभी ज़िन्दा रहना है और ज़िन्दगी का सफर बहुत लम्बा है, चिन्ता के बारे में यह उक्ति है कि चिन्ता जीव समेत अस्तु उज्जवल भविष्य की कामना के साथ सुखद जीवन की कल्पना लिये हुए भविष्य की सुन्दर लालसा के साथ सिर्फ़ कार्य करें चिन्ताओं को स्थान न दे।

तिथियों का महत्व समझना होगा

जीवन में तिथियों का महत्व होता है हर तिथि का अपना अलग महत्व होता है इन तिथियों की जीवन में हर समय उपयोगिता और महत्ता होती है जिस प्रकार वर्ष भर में 12 महीने होते हैं और हर महीने में जितनी भी तिथियां पड़ती हैं उनका अलग–अलग महत्व होता है, कोई जन्म दिन की तिथि होती है तो कोई मरण की तिथि होती है, कोई विवाह की तिथि होती तो कोई अलगाव की होती, हर तिथि अपनी अलग पहचान रखती है जो जिस तिथि को पैदा होता है वह उसी दिन अपना जन्म दिन मानता है चूंकि उस व्यक्ति को अपने उस तिथि की महत्ता पता होती है इसी तरह हर त्यौहार चाहे होली हो या दिवाली, ईद हो या बकरीद क्रिसमस हो या गुडफ्राईडे, गुरू गोविन्द सिंह का जन्म दिन हो या गुरुनानक का जन्म दिन, हर महत्वपूर्ण दिन का अपना अलग महत्व होता है और हम सब इन तिथियों की महत्ता को नहीं भूलते और निश्चित तिथि पर ही कार्यक्रम मनाते हैं।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी कुछ महत्वपूर्ण तिथियां हैं जिनका अपना अलग–अलग महत्व है, हमें हर तिथि के बारे में जानना चाहिये और इन तिथियों पर कार्यक्रम भी आयोजित करने चाहिये। इलेक्ट्रो होम्योपैथी में 8 महत्वपूर्ण तिथियां हैं जो क्रमशः इस प्रकार हैं :– 04 जनवरी,11 जनवरी, 24 अप्रैल, 02 जून, 21 जून, 25 जुलाई, 04 सितम्बर और 30 नवम्बर। अब हम इन तिथियों के बारे में आपको पुनः अवगत कराते हैं ताकि यह तिथियां और इनके महत्व को आप अपने मस्तिष्क में अंकित कर लें। 04 जनवरी का दिन उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि 4 जनवरी, 2012 को उत्तर प्रदेश के चिकित्सा विभाग द्वारा बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 के पक्ष में प्रथम और महत्वपूर्ण शासनादेश जारी कर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा, शिक्षा और अनुसंधान का अधिकार प्रदान किया है। **इस तिथि को अधिकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है,** इस तिथि का सबसे अलग महत्व है क्योंकि प्रदेश में अधिकारपूर्वक कार्य करने के लिए इस तिथि का योगदान कभी नहीं भुलाया जा सकता है, अगली तिथि 11 जनवरी की है वैसे तो हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ इस तिथि की महत्ता को जानता है 11 जनवरी, 1809 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आविष्कारक डा0 काउण्ट सीज़र मैटी का जन्म इटली में हुआ था पूरे विश्व में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के समर्थक 11 जनवरी का दिन डा0 काउण्ट सीज़र मैटी के जन्मदिन के रूप में उत्साह पूर्वक मनाते हैं, 24 अप्रैल के दिन की अपनी अलग महत्ता है।

प्रदेश में एक मात्र विधि सम्मत ढंग से स्थापित व प्रदेश सरकार द्वारा आदेश प्राप्त संस्था बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की स्थापना 24 अप्रैल, 1975 को कानपुर में डा0 मो0 हाशिम इदरीसी द्वारा की गयी थी, आपको यह भी जानना होगा कि डा0 इदरीसी के एकल प्रयासों का परिणाम है कि आज पूरे देश में यदि किसी संस्था विशेष के लिए शासनादेश जारी किया गया है तो वह है बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ0प्र0। 24 अप्रैल के दिन को स्थापना दिवस के रूप में प्रति वर्ष धूमधाम से मनाया जाता है, 02 जून का दिन भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कम महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि 02 जून का दिन विश्व इलेक्ट्रो होम्योपैथी दिवस के रूप में मनाये जाने की घोषणा 21 जून 2014 को सर्वसम्मति से की गयी थी, इस दिवस को विश्व इलेक्ट्रो होम्योपैथी दिवस के रूप में पूरे विश्व में मनाया जाता है। 21 जून की तिथि की महत्ता को कोई भी इलेक्ट्रो होम्योपैथ भूल ही नहीं सकता, आपको याद होगा कि 25 नवम्बर, 2003 को भारत सरकार स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी आदेश जिसके गलत व्याख्यित होने के कारण पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक अघोषित बन्दी की तरफ मुड़ गयी थी हर तरफ निराशा और अवसाद था, तब 5–5–2010 को भारत सरकार ने एक स्पष्टीकरण जारी करके इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नवजीवन तो प्रदान कर दिया परन्तु यह नवजीवन कार्य करने का रास्ता नहीं खोल रहा था तब डा0 इदरीसी ने अपने बौद्धिक क्षमता का परिचय देते हुए जिस सूझ–बूझ के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कार्य करने का अवसर दिलाया उसका परिणाम 21 जून रहा, डा0 इदरीसी के व्यक्तिगत और साहसी प्रयासों के कारण ही भारत सरकार ने 21 जून, 2011 को इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के पक्ष में एक आदेश जारी करके पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा, शिक्षा और अनुसंधान की राह खोल दी और साथ–साथ प्रत्येक राज्य सरकारों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को आदेशित किया कि 21 जून, 2011 के इस आदेश का क्रियान्वयन अपने–अपने राज्य में करें, यह एक महत्वपूर्ण विजय है इसलिए इस तिथि को हम सब विजय दिवस के रूप में मनाते हैं। आपको यह भी जानना आवश्यक है कि इस संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 इदरीसी ही हैं। आज पूरा देश जिस विजय दिवस को विजय के रूप में मनाता है इसका श्रेय भी डा0 इदरीसी को ही जाता है। 25 जुलाई की तिथि का अपना अलग वैशिष्ट है, 25 जुलाई 1978 को कानपुर में डा0 इदरीसी द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया का गठन किया गया था यह संगठन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों, छात्रों, विद्यालयों व इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य करता है इसलिए 25 जुलाई का दिन इहमाई दिवस के रूप में पूरे देश में धूम–धाम से मनाया जाता है, अब 4 सितम्बर की तिथि आती है इस दिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आविष्कारक डा0 काउण्ट सीज़र मैटी का स्वर्गारोहण हुआ था इस तिथि को हम इलेक्ट्रो होम्योपैथ मैटी की पुण्य तिथि के रूप में मनाते हैं और शपथ लेते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थापना के लिए जीवन पर्यन्त कार्य करते रहेंगे आपको जानकर कष्ट होगा कि कुछ लोगों ने इस तिथि को विवादित बना दिया है इसके बाद अन्तिम तिथि के रूप में 30 नवम्बर का दिन आता है इस दिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मूधन्र्य विद्वान डा0 नन्दलाल सिन्हा का जन्म 30 नवम्बर, 1889 को हुआ था इस तिथि को सिन्हा जयन्ती (प्रेरणा दिवस) के रूप में मनाते हैं इस तरह से वर्ष पर्यन्त हम कुल 8 तिथियों को अति महत्वपूर्ण ढंग से आयोजित करते हैं 30 नवम्बर का दिन प्रेरणा दिवस के रूप में भी याद किया जाता है। पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों को चाहिये कि इन तिथियों को याद रखें और स्वयं कार्यक्रम आयोजित करें दूसरों को प्रेरित करें ऐसा करने से जनसामान्य के बीच में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का प्रचार व प्रसार होगा व परस्पर संवाद भी स्थापित होगा। आशा है कि इन तिथियों को आप विस्मृत नहीं करेंगे। यदि तिथियां विस्मृत होंगी तो आपके कार्यों का और जिससे प्रेरण लेकर आप कार्य कर रहे हैं उनका क्या होगा ?अब जब पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने का अच्छा वातावरण है तो इस वातावरण का हम सब उपयोग करें और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य करें।

डा0 मैटी ने जिस महत्वपूर्ण विधा को जन्म दिया जिसके मूल में मानवता की सेवा ही उद्देश्य हो ऐसे उद्देश्य से प्रेरित होना हम सब इलेक्ट्रो होम्योपैथों का नैतिक कर्तव्य है जिस तरह से जो जिस धर्म से जुड़ा है वह अपने धर्म के प्रति आस्थावान उन त्योहारों को धूम–धाम से मनाता है ठीक इसी तरह इलेक्ट्रो होम्योपैथों का धर्म इलेक्ट्रो होम्योपैथी है इसलिए इस धर्म के विकास के लिए जिन तिथियों का महत्व है उन्हें हमें उतने ही उत्साह से मनाना चाहिये जितने उत्साह से हम जीवन के अन्य महत्वपूर्ण क्षणों को मनाते हैं।

विश्व इलेक्ट्रो होम्योपैथी दिवस 2 जून आप सबके सहयोग से पूरे विश्व में मनाया जाये ऐसी हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ की इच्छा होनी चाहिये।

नवीनता तलाशते लोग

लोग जीवन भर नवीनता की तलाश में भटकते रहते हैं और इसी नये के भ्रम जाल में उलझते हुए जीवन के उद्देश्य से भटक जाते हैं परिणाम यह होता है कि न उन्हें कुछ नये से मिलता है और पूराने को तो गवां ही चुके होते हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी में लगभग आज भी 90 प्रतिशत लोग नये की तलाश में भटक रहे हैं वह यह नहीं सोच पाते कि घटनायें तो रोज़ घटती हैं लेकिन कुछ चीजें बार–बार नई नहीं होती हैं जैसे माता पिता एक बार मिल जाते हैं जीवन भर वह हमें संरक्षण देते हैं क्या किसी को जीवन में कई बार नये माता पिता मिलते हैं ?तो इसका उत्तर शायद 100 प्रतिशत लोग न में ही देंगे।

अपवाद हर जगह होते हैं इसलिए उनकी चर्चा नहीं होनी चाहिये यहां पर यह प्रसंग इसलिए लिखा जा रहा है क्योंकि प्रतिदिन हज़ारों व्यक्ति जिम्मेदार लोगों से पूछते हैं कि कुछ नया हुआ क्या ?यदि यह प्रश्न कोई नव प्रवेशी या नया समर्थक करे तो बात समझ में आती है कि शायद इस व्यक्ति की जिज्ञासा होगी लेकिन जिन्होंने अपना पूरा जीवन इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सेवा में गुज़ार दिया हो और जब ऐसे लोग इस तरह के प्रश्न करते हैं तो बहुत अटपटा लगता है नये की तलाश हमें तब थी जब हम अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे आज अधिकार मिल चुके हैं सिर्फ कार्य करना है इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बहुत कुछ नया हुआ है सबसे पहला नया 27 मार्च, 1953 को हुआ जब उत्तर प्रदेश सरकार ने पहला अर्धशासकीय पत्र जारी किया था और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय संरक्षण मिलने की आस जगी थी, दूसरा नया हुआ था 24 अप्रैल, 1975 को जब बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की स्थापना हुई थी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा को व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए विद्यालयी अवधारणा आकार में लायी गयी थी, तीसरा नया हुआ था जब 18 नवम्बर, 1998 को माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए भारत सरकार सहित सभी राज्य सरकारों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को दिशा निर्देश जारी किये थे, चौथा नया हुआ था (जो कि देहाती कहावत चार चौपटा को सत्य सिद्ध कर गया था) 25 नवम्बर, 2003 का वह आदेश जो अज्ञानता व अविवेक के कारण उस समय विष बन गया था आज वही संजीवनी बनकर सामने है, पांचवा नया 5–5–2010 को हुआ था जब सात साल की गहरी निराशा के बाद आशा की किरण जगी थी, छठा नया हुआ था जब 21 जून, 2011 को भारत सरकार का आदेश आया जिसने काम करने की सारी बाधायें दूर कर दीं। जैसे बालक जन्म के छठवें दिन हर घर में छठी का उत्सव मनाया जाता है और कामना की जाती है कि जन्मे बालक का भाग्य प्रबल हो और भविष्य उज्जवल हो, सातवां नया आदेश सन 2012 में आया और इसने पूरे प्रदेश को प्रफुल्लित करके रख दिया, संतान जन्म के बारहवें दिन संतान का बारहवां मनाकर यह बताया जाता है कि अब यह संतान राष्ट्रहित,परिवार हित व समाज हित के लिए कार्य करेगा। 4 जनवरी, 2012 का यह आदेश हमें यही संदेश देता है कि अब सिर्फ कार्य करना है और कार्य करते हुए पद्धति को आगे ले जाना है इसे हम महज़ संयोग नहीं कहेंगे और न ही शब्दों की बाज़ीगरी, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सबकुछ वही घटित हुआ जो परम्पराओं में वर्णित है। शिशु जन्म के बाद शिशु को पढना होता मेहनत करनी होती है अपने लिए दिशा तय करनी होती है अभिभावक पठन पाठन के लिए सिर्फ विद्यालय का चयन करते हैं और ज्ञानार्जन की प्रक्रिया पूरी करते हैं लेकिन ज्ञान और प्रतिभा का प्रदर्शन पालक नहीं जातक करता है।

ठीक इसी तरह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अनुवाकारों ने 4 जनवरी, 2012 का आदेश लाकर कार्य करने का रास्ता बना दिया 2 सितम्बर, 2013 और 14 मार्च, 2016 उनके कार्य रूप में परिर्णित करने व अधिकार की पुष्टि की अन्तिम आदेश है। अब आपको इसी पर कार्य करते हुए आगे बढ़ना है इतना पाने के बाद किस नये की तलाश में हैं आप ? क्या आपने ईमानदारी से अपने दायित्वों का निर्वाहन किया है ? अपेक्षायें आवश्यक हैं लेकिन उन अपेक्षाओं के लिए कार्य आपको ही करने होंगे हर पल नया होगा लेकिन नये पन के लिए हम सबको सामुहित प्रयास करने होंगे मात्र संवाद के माध्यम से या पूछ लेने से काम नहीं चलने वाला है कि कुछ नया हुआ क्या ?

नये पन की तलाश में जो लोग कार्य नहीं कर रहे हैं या सफलता न मिलने की बात करते हैं वह सही माने में कार्य कर ही नहीं रहे हैं चूंकि किसी कार्य को करने के लिए जितने आवश्यक उपकरणों की आवश्यकता होती है वह सारे उपकरण आपको बोर्ड द्वारा उपलब्ध करा दिये गये हैं इन उपकरणों का प्रयोग कैसे करेंगे यह कला भी बोर्ड के अधिकारियों ने आपको सिखा दी है यदि आप अब भी नहीं सीख पाये तो बोर्ड के किसी सक्षम अधिकारी के सम्पर्क में आयें और जीवन जीने की कला सीखें। निराशा, अवसाद और चिन्ता आपको अकर्मण्यों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देगा किसी और के गुण दोषों पर चर्चा करने से अच्छा है हमें जो मिला है उसपर ही संतुष्ट हों और यह आप निश्चित मानिये कि आपको जितना कुछ मिल चुका है अगर उसका उपभोग आप नहीं कर पाते तो शायद आप कुछ और पाने के लायक नहीं हैं, विधि सम्मत ढंग से कार्य करते हुए उद्देश्य को पाने के लिए कार्य करें चूंकि आने वाले दिनों में आपको बहुत कुछ मिलने वाला है लेकिन जो ले पायेगा वही उसका उपभोग करेगा इसके लिए कृष्ण और सुदामा का एक प्रसंग हर समय याद रखें कि सुदामा और कृष्ण परम मित्रों में थे सुदामा की दुर्दशा को देखकर कृष्ण ने उन्हें सबकुछ दे दिया लेकिन दिशा भ्रमित होने के कारण सुदामा कुछ नहीं देख पाये और कहा कैसा मित्र है ! कुछ दिया ही नहीं, ठीक इसी तरह केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों ने हम जैसे सुदामाओं को सबकुछ दे दिया है परन्तु हमारी दृष्टि अभी कुछ नया पाने की है। इसलिए नये की तलाश में भटकना छोड़कर जो मिला है उसका उपभोग करें निश्चित मानिये कि जब आप कार्य करने लगेंगे तब मज़ा आने लगेगा और तभी आपको नये का वास्तविक स्वाद मिलेगा।

किसी ने कहा है – जो डूढ़ा तो पाईयां गहरे पानी पैठ इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी यही लागू हो रहा है जो मन लगाकर सिर्फ कार्य के लिए समर्पित हैं वह सब पा रहा है और जो सतह पर तैरते हुए मोती की तलाश करता है उसे मोती की जगह सिर्फ पानी के बुलबुले मिलते हैं सतह से धरातल की दूरी ज़्यादा नहीं होती बस बुलन्द हौसले के साथ तैरना आना चाहिये और न चलने वाले के लिए थोडी दूरी भी वर्षों तक नहीं तय की जा सकती है रायबरेली–प्रतापगढ से ज़्यादा दूर नही है यह तैरने वाले पर है कि दूरी कितने दिन में तय करता है या नहीं करता है, लेकिन हमारे तैराक कुशल हैं वह कुशलता से तैरते हुए हर नदी पार कर लेंगे।

पद्धति को बचाना है तो .... प्रथम पेज से आगे

सकता है। परिणाम हमें हर हाल में पाने है इसके लिए हम हर रचनात्मक कार्य करने से पीछे नहीं हटेंगे निराशा और भय के लिए अब कोई स्थान नहीं है न तो रास्ता दुर्गम है जब सब कुछ स्पष्ट और साफ साफ है तो कार्य करने में हिचकिचाहट नहीं होने चाहिये हम अभी प्रयास करेंगे कि हमारे जो नौजवान और बुज़ुर्ग साथी किसी कारण वश दिशा भ्रमित हो गये है वह वास्तविकता से परिचित हो और जिस ऊर्जा के साथ पूर्व में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य कर रहे थे उसी ऊर्जा को एक बार फिर से संक्षिप्त करके इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में अपना योगदान देंगे हम इंतजार करेंगे कि पूरी निष्ठा के साथ लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े यदि लोग नहीं जुड़ते है तो हमे अकेले चलने में भी कोई भी गुरेज नहीं होगा कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए जो लक्ष्य निर्धारित किये गये है उसे पूरा करना हम अपना धर्म समझते है और इस धर्म को निभाने में यदि हमें कुछ साथियों से बिछुड़ना भी पड़े तभी भी उस कष्ट को बर्दास्त करते हुए हम अपना धर्म निभायेंगे क्योकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति किसी व्यक्ति विशेष या संस्था विशेष के लिए नहीं है यह सम्पूर्ण मानवता के लिए है मानवता का कल्याण हो इस भावना से ओत प्रोत होकर हम पुनः आवाहन करते है कि पूरे मनोयोग और पूरी उर्जा से लग कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य करें।

भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा अधिकृत

एवं

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा स्वीकृत

तथा

महानिदेशालय, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें, उ0प्र0 द्वारा अनुमोदित

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0

द्वारा संचालित

F.M.E.H. अवधि 2 वर्ष (4 सेमेस्टर) अर्हता 10+2 अथवा समकक्ष

एवं

A.C.E.H. अवधि 1 सेमेस्टर अर्हता किसी भी राज्य परिषद द्वारा पंजीकृत चिकित्सक/2 वर्षीय मेडिकल अथवा पैरा मेडिकल पाठयक्रम उत्तीर्ण चिकित्सक

अध्ययन केन्द्र स्थापित करने हेतु

जनपद आगरा,मथुरा, मैनपुरी, हाथरस, एटा, कासगंज, गाजियाबाद, हापुड़ बागपत, मेरठ, मुजफ्फर नगर, सहारनपुर, रामपुर, अमरोहा, संभल, पीलीभीत, बरेली, बदायूं, सीतापुर में इच्छुक व्यक्ति/संस्थाओं से आवेदन आमन्त्रित हैं।

आवेदन पत्र एवं विस्तृत विवरण हेतु

बोर्ड की वेबसाइट www.behm.org.in पर log in करें

प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों की भाँति ही स्थापित होगी इलेक्ट्रो होम्योपैथी – डा0 इदरीसी

देश व प्रदेश में प्रचलित मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों की भाँति ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति को स्थापित करने का प्रयास किया जाना चाहिये क्योंकि यह चिकित्सा पद्धति प्रभावी व जीवनदायनी होने के साथ साथ सुलभ भी है। यह विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा आयोजित " विजय दिवस कार्यक्रम " में संगठन के अध्यक्ष डा0 मो0 हाशिम इदरीसी ने एसोसिएशन के सभागार 127/204 एस जूही में व्यक्त किये संगठन के अध्यक्ष डा0 मो0 हाशिम इदरीसी ने अपने वक्तव्य मे कहा कि भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने 21 जून, 2011 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन के लिए एक स्पष्ट नीति निर्धारित कर दी थी उसी तिथि को हम विजय दिवस के रूप में मनाते हैं उन्होंने बताया कि भारत सरकार के इसी आदेश के अनुपालन में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 04 जनवरी, 2012 को शासनादेश जारी कर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा, चिकित्सा का मार्ग प्रशस्त कर दिया है अब आवश्यकता है कि हम सब मिलकर सामान्य जन को इस पद्धति की उपयोगिता बतायें और समाज के बीच जाकर स्वंय की उपयोगिता सिद्ध करें।

संगठन के महासचिव डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी ने अपने वक्तव्य में कहा कि किसी भी चिकित्सक को किसी दूसरी पद्धति से तुलना नहीं करनी चाहिये बल्कि अपनी योगयता व अनुभव के आधार पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में अपना योगदान देना चाहिये लेकिन स्थापित होने के लिये आवश्यक है कि हम अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुये जनता को स्वास्थ्य लाभ प्रदान कर स्थापित होने के मार्ग में आगे बढ़ें। अब समय आ गया है कि हम सब मिलकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने का प्रयास करें क्योंकि सरकार की तरफ से हमें सब कुछ मिल गया है जरुरत है तो सिर्फ उसके उपयोग और उपभोग करने की और यह तभी सम्भव है जब हर एक में आत्म विश्वास पैदा होगा।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के सचिव डा0 अतीक अहमद ने बताया कि भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार ने हमें सबकुछ दे दिया है अब हमें केवल कार्य करने की आवश्यकता है इस विजय दिवस के अवसर पर हम सब को सिर्फ कार्य करने के बारे में नीति निर्धारित करनी चाहिये और उसी के अनुसार आगे कार्य करना चाहिये।

संगठन के संयुक्त सचिव मिथलेश कुमार मिश्रा ने अपने उद्बोधन मे कहा कि यह विजय दिवस हमारे लिए और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि आज विश्व योगा दिवस भी है इस दिवस को पूरा विश्व मना रहा है हम अपने इस विजय दिवस को इतना प्रचारित कर दें जैसे कि विश्व योगा दिवस। हमारा विश्वास है कि जिस प्रकार विश्व योगा दिवस मनाया जा रहा है उसी प्रकार इलेक्ट्रो होम्योपैथों द्वारा आने वाले वर्षों में विजय दिवस मनाया जायेगा, कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये डा0 प्रमोद कुमार सिंह ने कहा कि जिन अथक प्रयासों के बाद हमें यह विजय प्राप्त हुयी है उसके लिये हम डा0 इदरीसी के ऋणी हैं और हम यह विश्वास दिलाते हैं कि डा0 इदरीसी के नेतृत्व में हम कार्य करते रहेंगे।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सर्वश्री संजय कुमार द्विवेदी, ज़फ़र इदरीसी, मो0 वसीम, श्रीमती शाहीना इदरीसी,मारिया इदरीसी, नितिन मिश्रा, शालिनी मिश्रा, जीशान इदरीसी, साफ़िया इदरीसी, सोहन लाल, राम स्वरुप, नसीम आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन करते हुये श्री डा0 अतीक अहमद – महामंत्री इहमाई

पाँचवे विजय दिवस के अवसर पर मंच से अपने विचार देते डा0 मिथलेष कुमार मिश्रा – संयुक्त सचिव इहमाई।

पाँचवे विजय दिवस के अवसर पर मंच से अपने विचारों को प्रकट करते डा0 प्रमोद सिंह

पाँचवे विजय दिवस के अवसर पर इशारों–इशारों में अपनी बात रखते हुये डा0 एम0एच0 इदरीसी – राष्ट्रीय अध्यक्ष इहमाई।

पाँचवे विजय दिवस के अवसर पर मंच से ओजस्वी विचारों से ऑडियन्स को सम्बोधित करते डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई प्रमुख महा सचिव इहमाई।

पाँचवे विजय दिवस के अवसर पर शपथ लेते हुये पदाधिकारी

पाँचवे विजय दिवस पर उमड़ी भीड़ का दृष्य